विधा भारती आवासीय विद्यालय एवं जवाहर नवोदय विद्यालय के कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का विष्लेषणात्मक अध्ययन ।

दिनेष कुमार षर्मा

षिक्षक षा.उ.मा.वि.गॉधीनगर भोपाल

प्रस्तावना :– बालक कोरे कागज की भॉति होता है। उसके व्यवहार पर सर्वप्रथम प्रभाव उसके परिवार आस–पास के परिवेष एवं समाज का पड़ता है। बालक के व्यक्तित्व निर्धारित में परिवार एवं वातावरण का महत्त्वपूर्ण योगदान है। किसी राष्ट्र में प्रगति में कहॉ नागरिकों के व्यक्तित्व गुणों का महत्त्व योगदान होता है।

व्यक्तित्व गुणों का विकास प्रायः बाल्यकाल में होने लगता है । षालेय परिवेष मे यह पृष्ठ होकर यह पहचान स्थापित करता है। व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति सभी गुणो के समिन्वित अभिव्यक्ति होती है। व्यक्तित्व गुणों जड़ या स्थिर नही होते बल्कि लगातार बदलते रहते है। परिस्थितियो के प्रभाव में व्यक्तित्व में परिवर्तन संभव है। व्यक्तित्व लंबे अंतराल में परिस्थितियो से प्रभावित होकर गतिषील होते है।

व्यक्तित्व में षारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनो गुणों का मिश्रण होता है। इस प्रकार व्यक्तित्व में स्वास्थ्य, शारीरिक गठन , वाणी जैसे षारीरिक गुण के साथ मैत्री परोपकार , समाजसेवा, बुद्वि–स्वभाव चरित्र जैसे मनोवैज्ञानिक गुण समाहित रहते है। इसके साथ–साथ व्यक्तित्व गुणों के निर्माण में वातावरण के साथ समायोजन करने की प्रवृत्ति प्रत्येक व्यक्ति में अलग–अलग होती है। व्यक्तित्व निर्माण के षिक्षा संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। वैदिक काल में छात्रों के सर्वागीण विकास पर बल दिया जाता था। यही कारण है कि उस समय षिक्षा का उद्देष्य व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करना था । षिक्षा द्वारा बालक में सामाजिकता , नेतृत्व क्षमता, सहनषीलता परोपकार , कर्तव्यपालन जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास किया जाता था ।

वैदिक काल की गुरूकुल व्यवस्था व्यक्तित्व निर्माण के आधार के गुरूकुल में रहकर बालक आचार्य के मार्गदर्षन में आदर्ष व्यक्तित्व गुणों को ग्रहण करते थे।

वस्तुतः समाज व परिवार से दूर रहकर बालक में समायोजन , आत्मविष्वास, व्यवहार निर्णय क्षमता एवं नेतृत्व गुणों का विकास होता था ।

इसी गुरूकुल व्यवस्था से प्रभावित होकर ष्षासकीय व अषासकीय स्तर पर कोई आवासीय विद्यालय स्थापित किये गये।

जवाहर नवोदय विद्यालय :–

ष्राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 की अनुषंसा के आधार पर भारत सरकार नवोदय विद्यालय (गतिनिर्धारण) का निर्णय लिया 1986 में नवोदय विद्यालय समिति का गठन भारत सरकार ने किया इसके अतिरिक्ति संपूर्ण भारत नवोदय विद्यालय स्थापित किये गये यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित किये गये थे। इसके प्रमुख उद्देष्य निम्न थे :–

1. भारत के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का सामाजिक न्याय की अवधारणा के आधार पर गुणवता युक्त षिक्षा देना। प्रत्येक जिले में योब्य बालको के लिए नवोदय विद्यालय स्थापित किये जायेगे।
2. त्रिभाषा फॉर्मल के आधार पर उपयुक्त षिक्षक सुविधाऐ प्रदान करना ।
3. मानको की तुलनीयता सुनिष्चित करने तथा हमारे लोगो की सांझा एवं संयुक्त विरासत का बोध पैदा करने के लिए कोर पाठ्यक्रम प्रदान करना ।
4. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए देष के एक भाग के छात्रों को दूसरे भाग में अध्ययन हेतु प्रवसन नीति का पालन करना ताकि वह देष की सभी संस्कृति से समन्वय कर सके ।
5. बालकों को उत्तम षिक्षण हेतु सभी आधारभूत सुविधाये उपलब्ध करना ग्रामीण भारत के षिक्षण के उत्तर में अनुदान हेतु नवोदय विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह संविधान की मूल आत्मा के अनुरूप विषेष पिछडे क्षेत्रों के बालको के लिए गुणावतायुक्त षिक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निम्न रहे है।

विधाभारती में आवासीय विद्यालय :–

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मूल अवधारणा को केन्द्र में रखकर 1977 में राष्ट्रीय विधा भारती संस्थान की स्थापना की गई थी। नाना जी देषमुख पंडित दीनदयाल उपाध्याय के .....मानववाद दर्षन को लेकर इन विद्यालयों की स्थापना की गई थी। विधा भारती संस्थान आज देष का सबसे बडा अषासकीय षिक्षा संगठन है। इस संस्थान के लक्ष्य एवं उद्देष्य निम्न है :–

1. भारतीय संस्कृति एवं नवीन आदर्ष के अनुरूप स्वीकृत षिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना ।
2. छात्रों के ष्षारीरिक मानसिक एवं आध्यमिक विकास करने के लिए षिक्षा संस्थान की स्थापना करना ।
3. भारत के निर्माण हेतु कुषल देषभक्त भी नागरिकों का निर्माण करना ।
4. वर्तमान स्थिति के अनुरूप छात्रों में प्रतिस्पर्धी षिक्षण व्यवस्था उपलब्ध करना ।
5. राष्ट्र के लिए समर्पित , संस्कृति युक्त , व युवाओं का निर्माण करना ।

विधा भारती द्वारा भारत के सुविधाविहीन दुर्गम क्षेत्रों में गुणवत्ता युक्त षिक्षा प्रदान करने हेतु समाज के सहयोग से आवासीय विद्यालय स्थापित किये गये है। इन विद्यालय ने योग्य आचार्य पूर्ण मनोयोग के निर्धन विद्यार्थियों को उत्तम षिक्षण प्रदान कर रहे है।

विधा भारती के आवासीय विद्यालय तथा जवाहर नवोदय विद्यालय के कक्षा 10 के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का विष्लेषणक अध्ययन करना।

अध्ययन के उद्देष्य

1. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती में आवासीय विद्यालय के कक्षा 10 वी के

   विद्यार्थियों की व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

2. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती के .....विद्यालय के कक्षा 10 वी में बालक एवं बालिका के व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

3. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती में आवासीय विद्यालय कक्षा 10 वी के छात्रा के व्यक्तित्व गुणों पर वातावरण में प्रभाव का अध्ययन करना ।

अध्ययन की परिकल्पनाएँः–

1. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती के आवासीय विद्यालय के कक्षा 10 वीं विद्यार्थियों में व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती मे कक्षा 10 वीं के छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नही है।
3. नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती में विद्यालय के परिवेष का उनके व्यक्तित्व पर कोई सार्थक प्रभाव नही पडता है।

अध्ययन केयर :–

प्रस्तुत षोध में परतंत्र..... रूप में विघार्थियों की व्यक्तित्व गुणों तथा स्वतंत्र चर के रूप विद्यालय का वातावरण को लिया गया है।

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत षोध – वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्ष :–

प्रस्तुत शोध के निर्मित न्यादर्ष चयन हेतु ष्षोधार्थी जरा समभाव्य न्यादर्ष प्रविधि की यादृच्छिक न्यादर्ष चयन को अपनाते हुये म.प्र. के नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती संस्थान के 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण :–

शोध संकलन एस.....ए.आर श्रीवास्तव एस.डी.कपूर एवं जी.एन.पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित एच.एस.पी. क्यू. व्यक्तित्व अ.....को लिया गया है।

एच.एस.पी.क्यू. व्यक्तित्व .....के द्वारा दोनो प्रकार के विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का आकंलन किया गया । व्यक्तित्व कारक के 14 प्रकार के मानको पर स्कोर प्रदाय किये गये निम्न स्कोर तथा उच्च स्कोर के आधार प्रत्येक विद्यालय प्रभावी गुणों को रेखांकित कर तुलना की गई।

निष्कर्ष :–

1. जवाहर नवोदय विद्यालय के छात्रों में बर्हिमुखी , नेतृत्व क्षमता प्रसन्नचित , साहस , हंसमुख, सर्जनात्मक स्थिर दृढ़ प्रतिज्ञा गुण बहुतायत पाये गये ही केवल दस प्रतिषत छात्रों में संकोच अवसाद चिंता, एकाकी पत्र , हीनता का भाव देखने को मिला है। इसमें तुलना में विधा भारती के विद्यालय के छात्रों में नेतृत्व गुण , स्थिरता, सृजनषीलता, साहस, के गुण कम देखने को मिले यहां के छात्रों में तनाव , चिंता व विवाद भी नवोदय की तुलना में अधिक पाया गया ।
2. जवाहर नवोदय के बालको मे बालिका की तुलना साहस, निभौ.....के गुण अधिक देखने को मिले इसके साथ लड़को में निर्णय लेने की क्षमता अधिक थी लेकिन सृजनात्मकता मे बालिका , बालकों से आगे थी । दोनो विद्यालय कि बालिकाओ की तुलना से स्पष्ट होता है कि नवोदय विद्यालय की बालिका में साहस एवं नेतृत्व गुण अधिक थे । जबकि आवासीय विद्यालय की बालिका में संकोच , संवेग, लज्जाषीलता अधिक थी । वह आसानी से धुलती मिलती नही है।
3. विद्यालय के भौतिक एवं अकादमिक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सकारात्म प्रभाव पडता है। नवोदय विद्यालय एवं विधा भारती संस्था के विद्यालय में पाठ्य सहगामी गतिविधियों ष्षारीरिक विकास हेतु .....सुविधाऐ होने से व्यक्तित्व विकास में सहायता मिली है। विद्यालय के परिवेष से आदर्ष वारिता , नैतिकता, साहस, नेतृत्व क्षमता एवं सृजनषीलता जैसे व्यक्तित्व गुणों का विकास हुआ है।

सुझाव :–

भारत प्रारंभ किये जा रहे षासकीय व अषासकीय आवासीय विद्यालय के छात्रों में अलगांव व अवसाद की प्रवृत्ति देखने को मिल रही है। अतः आवासीय विद्यालय के छात्रों को नियमित अंतराल में परिवार के साथ रहने हेतु कैलेण्डर में बदलाव की आवष्यकता ही साथ जहां विद्यालय स्थापित किये है। वहां के स्थानीय परिवेष से छात्रों को जोड़ने की आवष्यकता है। .....दया, समाज,धर्म, अध्यात्म से जोड़कर व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव किये जा सकते है।